आचार्यश्री महाप्रज्ञ समाधि स्थल का शिलान्यास

आचार्य महाप्रज्ञ अहिंसा का जीवन जीने वाले विरले महापुरुष थे : आचार्य महाश्रमण

सरदारशहर 18 नवज़्बर, 2010

आचार्य महाप्रज्ञ समाधि स्थल का शिलान्यास समारोह आज प्रातः 7.15 बजे जैन संस्कार विधि पूजन के साथ किया गया, इस समारोह में देशभर से समागत समाज के विशिष्ट व्यक्ति उपस्थित थे। रतनगढ़ रोड स्थित आचार्यश्री महाप्रज्ञ की समाधि स्थल के शिलान्यास में प्रथम शिला तेरापंथ धर्मसंघ की शीर्षस्थ संस्था जैन श्वेताज़्बर तेरापंथी महासभा के अध्यक्ष चैनरूप चिण्डालिया ने रखी। उसके पश्चात् महासभा के प्रधान न्यासी राजेन्द्र बच्छावत, चातुर्मास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष सुमतिचन्द गोठी, जैन विश्व भारती के अध्यक्ष सुरेन्द्र चौरड़िया, महासभा के उपाध्यक्ष एवं चातुर्मास व्यवस्था समिति के महामंत्री रतन दुगड़, चातुर्मास व्यवस्था समिति के उपाध्यक्ष राजकरन सिरोहिया, सहमंत्री बजरंग सेठिया, संतोष सुरेन्द्र दुगड, बीकानेर के वरिष्ठ श्रावक मूलचन्द बोथरा, आचार्य भिक्षु समाधि स्थल संस्थान सिरियारी सुरेन्द्र सुराणा, जैन विश्व भारती के मंत्री जीतेन्द्र नाहटा, अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मण्डल की अध्यक्षा कनक बरमेचा, सुरज बरड़िया, स्थानीय तेरापंथ सभा के अध्यक्ष अशोक नाहटा, डालमचन्द बैद, मर्यादा कोठारी, अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के उपाध्यक्ष तुलसी दुगड़, मनोज लुणिया आदि विशिष्टजनों ने शिलान्यास किया।

जैन संस्कार विधि से शिलान्यास समारोह के पश्चात समाधि स्थल के पास बने विशाल पण्डाल में बड़ी स्क्रीन पर समाधि बनने के पश्चात जो रूप सामने आएगा उसकी परिकल्पना प्रस्तुत की जिसे देखकर लोगों ने ओम अर्हम की ध्वनि से हर्ष प्रकट किया।

आचार्य महाश्रमण ने गांधी विद्या मन्दिर दीपचन्द नाहटा निवास से प्रातः विहार कर समाधि स्थल पहुंचकर अपने गुरु आचार्य महाप्रज्ञ का ध्यान मुद्रा में स्थित होकर स्मरण किया। उसके पश्चात समाधि स्थल के समीप बने प्रवचन पण्डाल में पहुंचकर अपने उद्‌बोधन में कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ की स्मृति का शिलान्यास सीधा हमारे से जुड़ा हुआ प्रसंग नहीं है, यह समाज का कार्य है। समाधि स्थल में अनेक अनुदानदाताओं की घोषणा हुई है किंतु अनुदान कोई भी दे समाधि स्थल के आस-पास अनुदानदाता का नाम नहीं लगना चाहिए।

उन्होंने कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ श्रुतोपासना में रहते, उनमें संयम की साधना, वत्सलता, करुणा थी किंतु संसार का नियम है कि एक दिन व्यक्ति चला जाता है। मुझे दो गुरुओं का योग मिला जिन्हें मैं धर्माचार्य कहता हूं उनमें आचार्य तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ थे। तेरापंथ के दस आचार्यों में सर्वाधिक आयुष्य प्राप्त करने वाले आचार्य महाप्रज्ञ थे उन्होंने लंबे समय तक धर्मसंघ की सेवा की, सबको अहिंसा, मैत्री, शांति का संदेश दिया। लोगों को सुधारने का काम किया और वे स्वयं अहिंसा का जीवन जीने वाले विरले महापुरुष थे। चतुर्मास के

पश्चात् छोटी यात्रा घोषित है। हमें शक्ति मिले कठिनाइयों से हम घबराते नहीं है, जीवन में छोटी कठिनाइयां आ जाए तो उससे दूर रहने का अवसर मिले।

साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा, मुज्य नियोजिका साध्वि विश्रुतविभा ने अपने विचार व्यक्त किये।

उन्होंने यह भी कहा कि इस स्थान पर आने वालों को ऐसी पवित्र प्रेरणा मिले, जिससे वे तनाव मुक्त रहे और अपने जीवन को अच्छा बना सके। आचार्य महाश्रमण ने 'पूज्यवर महाप्रज्ञ भगवान' गीत का संगान भी किया।

इस अवसर पर जैन श्वेताज़्बर तेरापंथी महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष चैनरूप चिण्डालिया ने कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ आत्मदृष्टा, युगदृष्टा एवं भविष्यदृष्टा संत थे। बच्छावत परिवार की ओर से संगीता बच्छावत ने सुमधुर गीतिका प्रस्तुत की। यूक्रेन से समागत अंतर्राष्ट्रीय प्रेक्षाध्यान शिविर में भाग लेने वाले युक्रेन के पॉप सिंगर अलेकजेंडर एवं सभी विदेशियों ने रशियन भाषा में प्रेक्षा गीत को स्वर देकर सबको मंत्र मुग्ध कर दिया।

एफ.सी.ए. रतन दूगड़ ने आभार प्रकट किया। कार्यक्रम का संचालन महासभा के महामंत्री भंवरलाल सिंघी ने किया।

इन्होंने किया जैन संस्कार विधि से पूजन - पन्नालाल पुगलिया, रतन दुगड़ (एफ.सी.ए), मर्यादा कोठारी, प्रदीप संचेती, संजय खटेड़, तुलसी कुमार दुगड़, सलील लोढ़ा, अविनाश नाहर एवं राष्ट्रीय संस्कार प्रभारी बजरंग सेठिया ने किया। जैन संस्कार विधि से मंत्रोच्चार करते हुए समाधि स्थल का शिलान्यास करवाया।

ऐसे होगा समाधि स्थल का स्वरूप

जैन श्वेताज़्बर तेरापंथी महासभा के अध्यक्ष चैनरूप चिण्डालिया ने समाधि स्थल के स्वरूप का उल्लेख करते हुए कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ समाधि स्थल निर्माण का दायित्व जैन श्वेताज़्बर तेरापंथी महासभा को मिला, महासभा परिवार आचार्य प्रवर के प्रति अत्यन्त कृतज्ञ हैं। यह समाधि स्थल आचार्य महाप्रज्ञ की गरिमा के अनुरूप बने, ऐसा हमारा पुरजोर प्रयास रहेगा। इस समाधि स्थल पर छः विशाल कक्ष निर्मित किये जायेंगे। प्रथम कक्ष श्रव्य-दृश्य कक्ष होगा जिसमें आचार्य महाप्रज्ञ से सज़्बन्धित डॉक्युमेंटरी का प्रसार एवं अन्य श्रव्य-दृश्य सामग्री उपलब्ध होगी। दूसरा कक्ष पूज्य प्रवर को उपहृत किये गये विभिन्न उपहार एवं स्मृति चिन्हों से सज्जित होगा। तीसरा कक्ष कलाविथि के रूप में होगा जिसमें पूज्य प्रवर से सज़्बन्धित पेंटिंग्स होगा। चौथा कक्ष पुस्तकालय सह शोध केन्द्र होगा, जिसमें पूज्य प्रवर द्वारा सृजित एवं उनसे सज़्बन्धित साहित्य का संकलन होगा तथा शोध कार्य की व्यवस्था भी होगी। पांचवा कक्ष रोबोटिक सेन्टर होगा, जिसमें आचार्य महाप्रज्ञ के विभिन्न व्याज़्यानों का रोबोटिक प्रदर्शन होगा। छठा कक्ष ध्यान कक्ष के रूप में निर्मित किया जायेगा। इन विशाल कक्षों के अतिरिक्त मुज़्य समाधि के चारों ओर चार हजार वर्ग फीट का स्थान श्रद्धालुओं के उपासना के लिए होगा जहां बैठकर वे आध्यात्मिक प्रवृतियां कर सकंगे। इस स्थान के चारों ओर दो हजार व्यक्तियों के बैठने के लिए ओपन थियेटर होगा, यहां भी

विभिन्न गतिविधियां संचालित की जा सकेगी। समाधि के पृष्ठ भाग में 12 कमरों का एक आवासीय ब्लॉक निर्मित किया जायेगा उसके साथ ही केन्टीन तथा कर्मचारियों के आवास कक्ष होंगे।

पूरा-भू-भाग सुरज्य एवं अध्यात्ममय हो इस हेतु पूरी भूमि पर लैण्डस्केपिंग, उपवन प्रकाश व्यवस्था पर विशेष ध्यान दिया जायेगा। समाधि स्थल के प्रवेश के समीप ही पार्किंग सुविधा, बुक स्टॉल तथा कार्यालय कक्ष होंगे। सज्पूर्ण समाधि स्थल को इस प्रकार से विकसित किया जायेगा जिससे यह एक ऊर्जा केन्द्र बने तथा उपासक एवं पर्यटक को शांति का अनुभव हो।

चिकित्सा सुविधा का शुभारंभ

सरदारशहर 18 नवज़्बर, 2010

आचार्य महाश्रमण का ऐतिहासिक चातुर्मास सरदारशहर में सानंद सज्पन्नता की ओर है। इस प्रवास की स्मृतियों को चिरस्थायी बनाने, सरदारशहर के तेरापंथी समाज के जरूरतमन्द भाई बहिनों को चिकित्सा सुविधा उपलब्ध करवाने हेतु अपने पिता स्व. बच्छराज एवं मातुश्री रतनीदेवी नाहटा की स्मृति में बिमलकुमार, संदीप, प्रियंक नाहटा, गुवाहाटी ने चिकित्सा सहायता योजना का प्रारंभ किया है। तेरापंथ समाज के जिन परिवारों को चिकित्सा सहायता की अपेक्षा हो उन भाई-बहनों से अनुरोध है कि इस सेवा से लाभान्वित होने हेतु सुजानमल दुगड़, पन्नालाल सेठिया, अशोक नाहटा, करणीदान चिण्डालिया, पीरदान बरमेचा, कमलकुमार बोथरा से सज्पर्क कर आवेदन पत्र प्राप्त कर जमा करा देवें। जिन परिवारों को जय तुलसी फाउण्डेशन से संपोषण प्राप्त हो रहा है वे इस चिकित्सा सहायता योजना में स्वत: ही सज्मिलित माने जाएंगे

जीवन विज्ञान दिवस समारोह आज

सरदारशहर 18 नवज़्बर, 2010

आचार्य महाप्रज्ञ को समर्पित महाप्रा अलंकरण के उपलक्ष में आज (19 नवज़्बर, 2010) तेरापंथ भवन में सुबह 11 बजे जीवन विज्ञान दिवस समारोह मनाया जायेगा उक्त जानकारी जीवन विज्ञान अकादमी के सहमंत्री नरेश सोनी ने बताते हुए कहा कि आज प्रत्येक स्कूल के बच्चे रैली के रूप में अपने विद्यालय से रवाना होकर तेरापंथ भवन पहुंचेंगे रैली के पश्चात भवन में आचार्य महाश्रमण विद्यार्थियों को उद्बोधित करेंगे एवं प्रशिक्षण प्राप्त स्कूलों के बच्चों को 'प्रार्थना सभा में जीवन विज्ञान' की प्रतियोगिता का आयोजन होगा जिसमें प्रथम तीन स्थान प्राप्त करने वाले को पुरस्कृत किया जायेगा।

'ऊंची उड़ान' नाटिका का मंचन 19 को

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में 19 नवम्बर की रात्रि 7 बजे भ्रूण हत्या निषेध पर 'ऊंची उड़ान' नाटिका का मंचन किया जायेगा। अणुव्रत भावना पर आधारित इस नाटिका के द्वारा कन्या भ्रूण हत्या की बढ़ती घटनाओं पर समाज का ध्यान आकृष्ट करने के साथ ही उसके दुष्प्रभावों एवं हिंसक भावनाओं पर प्रकाश डाला जायेगा।

यह नाटिका डॉ. धनपत लूणिया एवं श्रीमती कुसुम लुणिया के निर्देशन अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मण्डल के तत्वावधान में तेरापंथ महिला मण्डल दिल्ली द्वारा किया जा रहा है। जिसके प्रायोजक रणजीतसिंह, मनोहर, मुकेश बोरड़, उज़्मेदमल, विनोदकुमार, प्रमोद बैद दिल्ली है।

– शीतल बरड़िया (मीडिया संयोजक)